

नर और नारी दोनों से ही इस संसार की शोभा और सुव्यवस्था है। दोनों शब्दों को अगर देखा जाये तो 'नारी' शब्द में दो मात्राएँ अधिक हैं— आ और ई। 'आ' जहाँ उसकी कोमलता(आ) को ध्वनित करता है वहीं 'ई' उसकी शक्ति को प्रदर्शित करता है। इन दोनों विरोधाभासी गुणों से युक्त नारी प्रकृति की एक अनमोल रचना है। एक तरफ वह कोमलांगी है तो दूसरी तरफ शक्तिस्वरूपा। शारीरिक दृष्टि से नर अधिक बलशाली होता है इसलिए नारी को अबला, कोमल, कमजोर कहा गया। फिर भी कभी कहने में नहीं आता 'नर शक्ति', हमेशा 'नारी शक्ति' ही कहा जाता। 'शक्ति' पर्याय हमेशा नारी के साथ ही लगाया जाता है, शक्तियों की पूजा देवी रूप में ही होती है। क्योंकि शक्ति का जैसा उदाहरण, जैसी झलक नारी के जीवन में है, वो पुरुष के जीवन में नहीं। वास्तव में नारी शक्ति का ही दूसरा नाम है। नारी सिर्फ पाँच तत्वों से बना शरीर नहीं है, लेकिन उसमें पाँच तत्वों की विशेषताएँ शक्तियों के रूप में समाई हैं।

समायोजन शक्ति

इस शक्ति के लिए जल का उदाहरण दिया जाता है कि जल को जिस साँचे में डाला जाये, वह उसी साँचे में ढल जाता है। नारी जल की तरह ही सरल है। नारी अपने बाल्यकाल से ही जीवन में आने वाले विभिन्न परिदृश्यों में स्वयं को ढालती जाती है। विवाह के पश्चात् एक नारी न केवल दूसरे परिवार को अपनाती है बल्कि उस परिवार के नियम-मर्यादाओं, रीति-रिवाजों व परिवार के सदस्यों के स्वभाव के अनुरूप अपने को सहज ही समायोजित भी कर लेती है। इसी विशेषता के आधार से एक नारी घर-परिवार बनाती है, बसाती है और इसीलिए उसे गृह-लक्ष्मी, गृह-शोभा, गृह-स्वामिनी, गृहिणी इत्यादि उपनाम दिये जाते हैं।

सृजन शक्ति

यह वो अद्भुत शक्ति है जो केवल नारी को ही प्राप्त है। नारी माँ है, जननी है, निर्मात्री है, रचयिता है और इस दृष्टि से वह ईश्वर के समकक्ष है। वह न केवल भावी पीढ़ी का सृजन करती है, बल्कि संस्कार-सिंचन भी करती है। वह धरती माँ की तरह पैदा करती और पालना करती है। वह धरती जैसी धैर्यवान और सहनशील है।

भक्ति की शक्ति

धर्मग्रन्थों में नारी को 'शिवशक्ति' और 'शिवभक्ति' कहा गया है। उसका ईश्वर में जो अटूट विश्वास है, जो आस्था, जो भावना है, जो प्रेम है, जो लगन है, वो अग्नि के समान प्रज्वलित रह उसका पथ-प्रदर्शन करती है। भक्ति से नारी अपने कठिन पथ को सरल बनाती है और जीवन-संग्राम में आने वाली परिस्थितियों से जूझने का संबल और साहस प्राप्त करती है। इसी से वह अपने मनोरथ को सिद्ध करती है और असंभव को संभव कर दिखाती है।

स्नेह की शक्ति

स्नेह वह महान गुण और शक्ति है जो प्राणवायु के समान जीवन को गति और सुकून देता है। जब बालक इस संसार में आता है तो माँ के स्नेह की अनमोल शीतल छत्रछाया में उसका सही पालन और विकास होता है। माँ के रूप में नारी ममता की सुन्दर मूरत है जिसके रोम-रोम में अथाह, अनुपम स्नेह समाया है। माँ, बेटी, बहन, पत्नी, दोस्त हर रूप से वो स्नेह-वर्षा बरसाती है। इस स्नेह-प्रेम की अद्भुत शक्ति से वह परिवार के सभी सदस्यों को अपना बना लेती है और सबके दिलों पर राज करती है।

पवित्रता की शक्ति

यह वह शक्ति है जो नारी को आकाश की ऊँचाई प्रदान करती है। इस कलिकाल के समय में नर और नारी दोनों का ही पतन हुआ है फिर भी निर्विवाद रूप से नारी की दृष्टि-वृत्ति नर की तुलना में बहुत पवित्र है। पवित्रता ही महान और पूज्य बनने का आधार है। भारत में देवों की भेंट में देवियों की जो इतनी पूजा होती है, नारी की पवित्रता की शक्ति को दर्शाती है। इस शक्ति के द्वारा ही नारी ने सदियों से अपने अस्तित्व को भी सुरक्षित रखा है और इस संसार को भी पतन के गर्त में गिरने से बचाया है।

उपरोक्त शक्तियों के अलावा नारी में अनेक महान शक्तियाँ समाहित हैं यथा त्याग की शक्ति, सहन शक्ति, परिवर्तन शक्ति आदि-आदि। इन शक्तियों के सम्मिलित स्वरूप का नाम ही नारी है, वही अष्टभुजाधारी देवी दुर्गा है जिसके आगे पुरुष भी शक्तियों का याचक बन नतमस्तक होता है।

नहीं बड़ी तन की शक्ति,
बल और धन की शक्ति।
सबसे बड़ी मन की शक्ति,
सृजन और पालन शक्ति।
इसलिए नारी का पक्ष भारी,
शक्ति का नाम है नारी।।